प्रेम की नवेली दास्तान

संदीप पांडे

प्रमोद अंतर्मुखी स्वभाव का लडका था । मौन मुस्कान या भौहों की सिकुड़न उसके खुशी या नाखुशी का दृष्टिगत पैमाना थी । गिने चुने दोस्तों के बीच उसकी उपस्थिति अक्सर मूक श्रोता की ही होती थी । कम बोलने के स्वभाव के कारण उसके माता पिता भी इस बात से अनभिज्ञ थे कि उनके बेटे मे कल्पनाशील अवलोकन शक्ति व लिखकर अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास हो रहा है । कहानी, उपन्यास पढ़ने के उसके शौक से परिचित उसके अभिभावक यह उसके समय गुजारने का साधन मात्र ही मानते थे । इसलिए उसके काफी जोर देने के बावजूद कला की जगह उसे वाणिज्य संकाय लेने के लिए मजबूर किया गया । आखिर सी.ए. पिता को वाणिज्य मे ही उसका सुनहरा भविष्य नज़र आ रहा था । एकाउटेंसी और बुक कीपिंग की मोटी किताब पढ़ने से समय बचा कर, वह अपनी पसंद की कविता, कहानी आदि पढने लिखने का समय निकाल ही लेता था । ग्यारहवी की अर्धवार्षिक परीक्षा में वो ठीक–ठाक नम्बर ले आया था इसलिए टीचर या अभिभावक में से कोई भी पढ़ाई के लिए टोका–टाकी नहीं करता था । इस बार विद्यालय की अंतर सदन कविता पाठ प्रतियोगिता मे उसका नाम लिख लिया गया था और उसको एक अच्छी कविता तैयार कर प्रस्तुत कर सुनाने के लिए आदेशित कर दिया गया था । हल्की घबराहट के बीच उसने स्वरचित कविता का जब गीत रूप मे पाठ किया, तो सबने दाँतो तले उँगली दबा ली । प्रतिद्वंदियों द्वारा भी काफी अच्छा पाठ किया गया था पर वो सब स्थापित कवियों की लोकप्रिय रचनाएँ थी जिन्हे पहले भी सुना जा चुका था । प्रमोद का पाठ खत्म होते ही कुछ पल की ख़ामोशी के बाद जब गगनभेदी करतल ध्वनि से इस्तकबाल हुआ तो उसकी आँखो से खुशियों के मोती टपक पडे । उसके जीवन का यह पहला ऐसा क्षण था । अचानक सबकी नज़रे उसके प्रति बदली–बदली सी प्रतीत होने लगी । अनजाने लोग भी उसके सामने से जब मुस्कुराते हुए निकलने लगे तो उसे कुछ अपने विशेष होने का सा अभास हुआ ।

अगले ही दिन लंच के समय मे एक सुंदर सी लड़की ने उसको हाय, बोला तो वो अचकचा सा गया । उसके मुँह से बस इतना निकला "जी" । उधर से आवाज आई मेरा नाम सुलेखा है और मै ग्यारहवीं आर्ट्स की स्टूडेंट हूँ । आप इतना अच्छा लिखते और गाते हैं पर आप पहले कभी नज़र नहीं आए?" "जी, मैंने पहली बार ही किसी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया है ।" "आप तो पूरे कलाकार लगते हैं । आपने आर्ट्स विषय नहीं चुना?" वो फिर बिना कुछ बोले मुस्कुरा भर दिया । "अगले हफ्ते पेन्टिंग का कॉम्पिटिशन है । मैं भी उसमें हिस्सा ले रही हूँ । आप जरूर देखने आना ।" न जाने क्यों प्रमोद को इस आमंत्रण मे कुछ अपनापन सा लगा और उसने गर्दन हिलाकर सहमति व्यक्त कर दी ।

पेन्टिंग प्रतियोगिता वाले दिन वो लंच टाइम में डिस्प्ले रूम मे पहुँच गया । सुलेखा अपनी बनाई पेन्टिंग के पास ही खडी थी । उसकी चेहरे की चमक ने बता दिया कि वो उसका ही इंतजार कर रही थी । सफेद लिबास मे लिपटी कल्पना मे खोई तरुणी की नीले बैकग्राउंड के साथ चित्र अप्रतिम लग रहा था । कुछ मिनट तक अपलक निहारने के बाद उसके मुँह से वाह.. निकल पडी । सुलेखा भी उससे कुछ ऐसे ही प्रतिक्रिया की उम्मीद कर रही थी । प्रसन्न भाव से बोली "पूरे पंद्रह दिन की मेहनत है । प्रमोद खोया खोया अभी भी चित्र को निहार रहा था....

"खोई रही ख्याल में प्रीतम की आस में
राधा खुद बनी श्याम, श्याम की प्यास में"

अब वाह सुलेखा के मुँह से निकलना वाजिब था । हल्के बतियाते दोनों ने बाकी सब पेन्टिंग्स पर भी नज़र डाली । "तुम्हारा पहला स्थान पक्का है । दूसरों की पेन्टिंग का स्तर तुम्हारे आसपास भी नहीं है ।" प्रमोद की इस तारीफ से सुरेखा एकदम लजाती हुई मुस्कुरा उठी । फिर अटकते हुए बोली "तुम्हारा कॉमर्स पढने मे दिल लग जाता है क्या?" "लगा लेता हूँ" प्रमोद ने धीरे से कहा । "आर्ट्स क्यो नहीं जॉईन कर लेते ।" सुलेखा तपाक से बोली । "हाँ,, पर मेरे पापा नही मानते । उनको लगता है मेरा फ्यूचर कॉमर्स में ज्यादा सिक्योर रहेगा ।" "पर तुम्हारी काबलियत तो कला मे ज्यादा नज़र आती है । तुम खुल कर अपने पेरेंट्स से बात करोगे तो वो जरूर कन्विंस हो जाएगें और अभी तुम चेंज करोगे तो कोर्स कवर भी कर लोगे । शायद बाद मे पछताने से तुम बच जाओगे ।"

प्रमोद ने शाम को हिम्मत जुटा कर माँ को अपनी बात समझाई तो उन्होंने अपनी सहमति तो प्रकट कर दी पर पापा से स्वयं बात करने को कह दिया । पिता उसके अक्सर रात देर से ही घर पहुँचते

थे । माँ ने आते ही उसकी इच्छा के बारे मे पिता को बताया तो वो गुस्सा हो गए । आधे घंटे तक पिता–पुत्र में अपनी बात मनवाने का द्वंद्व चलता रहा पर सच्चे और दृढ़ मन की जीत हुई और अगले ही दिन प्रमोद कॉमर्स छोड आर्ट्स की क्लास में आत्मविश्वास की नई उर्जा के साथ बैठा था ।

अब उसका ज्यादातर समय सुलेखा के साथ ही बीतता था । सुलेखा उसे अब तक पढा दिए पाठ को समझाने मे मदद करती और वो अपनी नई रचनाओं से उसे आनंद सागर मे सराबोर कर देता । स्वाभिमान और आकर्षण की डोर से वो ऐसा बंध गए थे कि उनको स्वयं ऐसा नही लगता कि उनको मिले कुछ महीने ही हुए हैं । एक अनकहा सा प्रेम दोनों महसूस कर रहे थे । प्रमोद काव्य सृजन से तो सुलेखा रंगो से अपनी अनुभूतियो को अभिव्यक्त कर रही थी । प्रमोद की कलम अब प्रेम गीत के सिवाय कुछ नही लिख रही थी और सुलेखा की पेन्टिंग मे लाल रंग ही प्रधान रूप से मौजूद रहता । दोनों साथ मे बैठ अपने को महकते चमन मे हिंडोले खाते सा महसूस करते तो अकेलेपन मे उस अहसास के आनंद में सराबोर रहते । एक–दूसरे के सिवा और सबकी उपस्थिति उनके लिए नगण्य सी हो गई थी । क्लास के लेक्चर हो या घर पर अभिभावक की बाते, अवचेतन मे एक नशे की सी खुमारी बनी रहती थी । सच कहते हैं लोग 'प्रेम एक नशा है ।' ग्यारहवी की वार्षिक परिक्षाएँ पूर्ण हो गई थी और अब एक महीने की छुट्टियाँ थी । सुलेखा ने बिना माँगे ही उसे अपना मोबाइल नम्बर दे दिया और रोज शाम को सात बजे कॉल करने की हिदायत भी दे दी । "तुम मेरा नम्बर भी नोट कर लो और मुझे कभी भी कॉल कर सकती हो ।" दोनों विदा हो गए और अब फोन पर बातचीत कर हृदय मे उठती ज्वाला को शांत करने का उपक्रम करते ।

दस दिन यही सिलसिला चलता रहा और फिर एक दिन सुबह ही सुलेखा का फोन आया । "मेरे पापा का प्रमोशन के साथ गांधीनगर बैंक ब्रांच मे ट्रांसफर हो गया है । कल ही हम सब शिफ्ट हो रहे हैं । पता नही अब मुलाकात होगी भी या नही ।" प्रमोद के तो पैरो तले जमीन सरक गई । उसने ऐसी कोई कल्पना भी नही की थी । उसने तो सुलेखा से कभी उसके परिवार के बारे मे भी नही पूछा था । स्पाट रोड पर आनंदित गति से चलते वाहन मे अचानक जबरदस्त ब्रेक लग गया था और गाडी हिचकोले खाने लगी । दिमाग संज्ञा शून्य सा हो गया । सुलेखा के जाने से पहले एक बार मिलने तक की हिम्मत ना जुटा सका ।

दो दिन गुमसुम से बैठे निकल गए । उसने ठीक से खाना भी नही खाया । माँ उसके भावों को समझने का असफल प्रयास करती पर वो जैसे तैसे उन्हे टाल देता । अगले दिन शाम को सुलेखा का

फोन आया तो उसने तपाक से उठाया । उसके हैलो करने से पहले ही सुलेखा बोली "मेरे फोन का ही वेट कर रहे थे?" "हाँ" उसकी आवाज मे पीडा थी जिसे सुलेखा ने साफ तौर पर महसूस कर लिया था । "अरे हम दूर ही हुए है अलग नही । हमारी दोस्ती पक्की है, जिसे दूरियाँ कभी नही मिटा सकती । हम संपर्क मे बने रहेंगे और तुम वादा करो अपने सृजन कार्य को जरा भी विराम नही दोगे ।" सुलेखा की बातें उसे तपती दुपहरी मे शीतल जल वर्षा के माफिक लगी । गहरे बादलो मे छुपा चाँद फिर पूरी चमक के साथ आसमान को आलोकित करने लगा ।

बारहवी का नया सत्र शुरू हो चुका था । पढाई अपनी गति से आगे बढ रही थी । प्रमोद की कविता, कहानी अब पत्र पत्रिकाओ मे छपने लगे थे । शहर के कुछ एक कवि गोष्ठियों मे भी उसने शिरकत करना शुरू कर दिया था । लेखन की धार अब निरंतरता से पैनी होती जा रही थी । वो अपनी हर प्रकाशित रचना को सुलेखा के पास जरूर भेजता । सुलेखा भी अपनी पेन्टिंग की फोटो उसको भेज कर उसकी राय माँगती । दोनों का मूक प्रेम अब नए दौर से गुजर रहा था । एक–दूसरे के प्रेम सागर मे गोते लगाते अपने हुनर के भी प्रेम मे डूबते जा रहे थे । सुलेखा ने आनलाइन प्लेटफार्म में अपनी पेन्टिंग का स्टोर खोल लिया था जिससे उसे ठीक–ठाक कमाई होने लग गई थी । इधर प्रमोद की जेबखर्ची का इंतजाम भी उसका लेखन कार्य कर रहा था । पर उसके पिता भविष्य को लेकर अब भी आशंकित थे ।

दोनों ने बारहवी भी अच्छे नम्बर से उत्तीर्ण कर ली थी । सुलेखा ने बी.ए. फाईन आर्ट्स और प्रमोद ने बी.ए. हिन्दी लिटरेचर में प्रवेश ले लिया और साथ में साधक की तरह अपने फन को तराशने में अपने स्तर के प्रयास मे लीन रहे । एक–दूसरे के उत्साहवर्धन हेतु वो अपने भावों को शब्दों में पिरो कर इलेक्ट्रॉनिक चिट्ठी के माध्यम से भेजते रहते । प्रेम अब गहराई के उस स्तर तक डूब चुका था कि जंहाँ से बाहर निकलने के सारे रास्ते बंद हो जाते हैं । श्याम मे राधा और राधा मे श्याम नज़र आते हैं ।

ग्रेजुएशन भी पूरा हो चुका था सुलेखा पेन्टिंग से अच्छा पैसा कमाने लग चुकी थी । प्रमोद की भी दो पुस्तक प्रकाशित हो चुकी थी । आय अभी कम ही थी । पर अब वो कुछ फिल्मकारों के संपर्क में आ चुका था और उसके गीतों को फिल्म में शामिल करने की बात चल रही थी । जीवन की राह अब एक दिशा मे चलती प्रतीत हो रही थी । प्रमोद ने अब सुलेखा से मिलने की इच्छा जाहिर की ।

"रुखसार से जुल्फों को अपने हाथो से हटाने की चाहत है
सदियों से रुके जज्बात को सामने अजमाने की चाहत है ।"

सुलेखा भी अब थोडा बहुत लिखना सीख गई थी।

"बेक़रारी सदा ही प्रेमियों ने तोहफे मे पाई है ।
मिलने की धडी मुश्किलो से ही मिल पाई है ।"

प्रेम गहरे सागर मे गोते लगाता आनंदित भी था और बेकरार भी । कर्म यथार्थ की ज़मीन पर पल्लवित हो रहे थे और प्रेम कल्पना का नया संसार रच रहे थे ।

प्रमोद की तीन गीतों का फिल्म में शामिल करने का कॉन्ट्रैक्ट साईन हो गया था । अच्छे पैसे भी मिले और नाम ने प्रगति की कई सीढ़ियाँ एक साथ चढ ली थी । स्नातक की डिग्री हाथ मे आने से पहले प्रमोद और सुलेखा अर्थ की मजबूत कुर्सी पर विराजमान हो चुके थे । अब दोनों के माता पिता भी उनके भविष्य को लेकर आश्वस्त हो चुके थे । अपनी तीसरी किताब की पहली प्रति लेकर प्रमोद बिना बताए गांधीनगर पहुँच गया । सुलेखा को उसके घर के पास के रेस्टोरेंट मे मिलने के लिए कहा तो वो दौडी चली आई । इतने सालों के बिछोह के बाद तो मिलन में आत्मीय आलिंगन के सिवाय कुछ और कल्पना करना नामुमकिन है । दोनों सबकुछ भूलकर बस कुछ लम्हो तक एक–दूसरे में खो गए । बिछोह प्रेम को मजबूती देता है तो मिलन भावनाओं का सैलाब । घंटे भर एक–दूसरे से प्रेम भरी बातों से तृप्त हो सुलेखा ने उसे लौट जाने को कहा । प्रमोद ने उसके सामने शादी कर लेने का प्रस्ताव रखा तो सुलेखा ने उसे नकारते हुए कहा, "क्या शादी करना जरूरी है? शादी करके हम प्रेमी–प्रेमिका की जगह पति–पत्नी बन जाएगे और हमारे प्रेम की गहराई कम हो जाएगी । हम जीवन भर शादी किए बिना ऐसे ही रहेंगे । इस तरह हम अपने काम और एक–दूसरे से प्रेम के स्तर मे बढ़ोत्तरी ही करेंगे और जब मिलने का मन करेगा तो ऐसे ही घर या बाहर कहीं भी मिल सकते हैं ।" प्रमोद आज फिर निरूत्तर था । पर उसे अपनी सुलझी सुलेखा पर गर्व भी हो रहा था ।

साठ साल के प्रमोद और सुलेखा आज भी अपने कार्य और प्रेम भरे जीवन से प्रसन्न है । लैला–मजनू, शीरी– फरहाद जैसा अमर प्रेम ना सही पर दोनों ने प्रेम की नई दास्तान तो लिख ही दी थी ।